सुन मेरी देवी पर्वतवासनी आरती | By Tripty Shakya |

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

पान सुपारी ध्वजा नारियल ।
ले अम्बे तेरी भेंट चढ़ाया ॥
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

साड़ी चोली तेरे अंग बिराजे
केसर तिलक आज लगाया
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

ब्रम्हा वेद पढ़े तेरे द्वारे
शंकर ने है ध्यान लगाया
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

नंगे नंगे पग से तेरे सन्मुख अकबर
आया सोने का छत्र चढ़ाया
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

ऊँचे पर्वत बण्यो शिवाला
और निचे है महल बनाया
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

सत्युग, द्वापर, त्रेता मध्ये ।
और है कलयुग राज बसाया
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

धूप दीप नैवैध्य आरती ।
और मोहन ने भोग लगाया
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

ध्यानु भगत मैया तेरा गन गावे
और मनवांछित फल है पाया
सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

सुन मेरी देवी पर्वतवासनी ।
तेरा मैंने पार न पाया ॥

%e0%a5%80-%e0%a4%a6%e0%a5%87%e0%a4%b5%e0%a5%80-%e0%a4%aa%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%b5%e0%a4%a4%e0%a4%b5%e0%a4%be%e0%a4%b8%e0%a4%a8%e0%a5%80/